# HINDI 2nd SEMESTER

## Topic-हिंदी कहानी का उद्भव और विकास/Class- 1/Hindi Method

कथा-किस्सों का इतिहास भारतीय परंपरा में बहुत पुराना है। हितोपदेश की कथाओं और बैताल पचीसी जैसी कथाओं के माध्यम से भारतीय समाज में नीति-नैतिकता और आदर्श की शिक्षाएँ दी जाती रही हैं। कहानी के रूप में साहित्य की जिस विधा का हम अध्ययन करते हैं।

हिंदी कहानी के उद्भव और विकास में बांग्ला साहित्य का विशेष योगदान रहा है। अंग्रेजी का साहित्य अनुवाद के रूप में बांग्ला में आया और बांग्ला से यह हिंदी में आया। आज की हिंदी कहानी के उद्भव की शुरुआत यहीं से मानी जा सकती है।

भारतेंदु युग सन् 1857 ई. से शुरुआत मानी जाती है। इस कालखंड में भारतेंदु हरिश्चंद्र सहित अन्य साहित्यकार नाटकों और निबंधों के लेखन में ज्यादा सक्रिय थे। हालाँकि इस काल में कुछ कहानियाँ लिखी गईं, मगर उन्हें हिंदी की मौलिक कहानी नहीं माना जाता है।

द्विवेदी युग सन् 1900 ई. से शुरू होता है। इस कालखंड में लिखी गई रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' और बंग महिला की 'दुलाईवाली' कहानियों को हिंदी की प्रारंभिक कहानी माना जाता है। इस दौर में अकसर रहस्य और रोमांच से भरी हुई कहानियाँ लिखी जाती थीं। इस तरह द्विवेदी युग में हिंदी कहानी का प्रारंभिक दौर नज़र आता है।

### हिंदी कहानी से संबंधित प्रश्न-उत्तर

1. आचार्य रामचंद्रा शुक्ल के अनुसार हिन्दी की पहली कहानी कौन सी है ?

उ. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी की पहली कहानी इन्दुमती है।

2. इन्दुमती कहानी का प्रकाशन कब हुआ था ?

उ. इंदुमती कहानी का प्रकाशन 1990 ई. में हुआ था।

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'ग्यारह वर्ष का समय' कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी ?

उ. आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'ग्यारह वर्ष का समय' कहानी 'सरस्वती' पत्रिका में 1903 में प्रकाशित हुई थी।

4. दुलाई वाली कहानी के लेखक कौन हैं ?

उ. दुलाई वाली कहानी के लेखक राजेंद्र बाला घोष 'बंग महिला' हैं।

5. जयशंकर प्रसाद के दो कहानियों के नाम लिखिए ?

उ. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी आकाशदीप, आँधी, छाया आदि हैं।

## HINDI 2nd SEMESTER

## Topic-हिंदी कहानी का उद्भव और विकास/Class- 2/Hindi Method

प्रेमचंद युग हिंदी कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद के आने के साथ ही एक नया युग शुरू होता है। प्रेमचंद ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखीं। इस दौर में अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य का प्रभाव कम होने लगा और हिंदी कहानी में भारतीय समाज दिखने लगा। इस कालखंड में जयशंकर प्रसाद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, वृंदावनलाल वर्मा आदि ने कई कहानियाँ लिखीं।

प्रेमचंदोत्तर काल (सन् 1930 से 1947 ई.) तक माना जाता है, इस समय जैनेंद्र और इलाचंद्र जोशी ने मनोविश्लेषणवादी कहानियाँ लिखीं। रांगेय राघव और फणीश्वरनाथ रेणु ने आंचलिक कहानियाँ लिखीं। यशपाल ने प्रगतिवादी विचारधारा को आधार बनाकर कहानियाँ लिखीं। इस कालखंड में यथार्थपरक-सामाजिक परंपरा, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परंपरा, यौनवादी परंपरा, हास्य-रस परंपरा और साहसिक परंपरा की कहानियाँ लिखी गईं। इस कालखंड में अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क, नागार्जुन, विष्णु प्रभाकर और उषादेवी मित्रा आदि कहानीकारों ने हिंदी कहानी के विकास में योगदान दिया।

सन् 1947 ई. से वर्तमान तक के स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी कहानी में अनेक वाद, विमर्श और आंदोलनों का आगमन हुआ। इसमें नई कहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, अ-कहानी और सक्रिय कहानी आदि धाराओं का उल्लेख किया जा सकता है। इस दौर में कमलेश्वर, मार्कंडेय, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कृष्णा सोबती, धर्मवीर भारती, अमरकांत आदि कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से हिंदी कथा-साहित्य को समृद्ध किया।

हिंदी कहानी की उत्पत्ति और विकास को निम्न विभाजन के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

**(क) प्रारंभिक युग (1930 ई. तक)**

**(ख) द्वितीय युग (1930 से 1947 ई. तक)**

मनोविश्लेषणवादी परंपरा

प्रगतिवादी परंपरा

ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परंपर

हास्य-रस की परंपरा

**(ग) स्वातंत्र्योत्तर युग (1947 ई. से वर्तमान तक)**

नयी कहानी

समांतर कहानी

अकहानी

## हिंदी कहानी से संबंधित प्रश्न-उत्तर

6. आज की कहानी को 'नयी कहानी' नाम किसने दिया ?
उ. आज की कहानी को नयी कहानी नाम डॉ॰ नामवर सिंह ने दिया।
7. प्रेमचंद्र के उर्दू में लिखे कहानी संग्रह का नाम क्या है ?
उ. प्रेमचंद्र के उर्दू में लिखे कहानी संग्रह का नाम 'सोजे वतन'(1907) है।
8. कौन सी कहानी शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद है ?
उ. 'इंदुमाती' कहानी शेक्सपियर के टेम्पेस्ट का अनुवाद है।
9. 'रानी केतकी की कहानी' का प्रकाशन किस वर्ष हुआ ?
उ. रानी केतकी की कहानी का प्रकाशन 1803 ई॰ में हुआ।
10. आंचलिक कहानी लिखने वाले दो लेखकों के नाम बताए ?
उ. आंचलिक कहानी लिखने वाने रांगेय राघव और फणीश्वरनाथ रेणु हैं।

## HINDI (HONS)-2nd SEMESTER
## Topics- हिंदी निबंध का उद्भव और विकास / Class-3/ Hindi Method

निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को स्वच्छंद रूप में इस प्रकार व्यक्त करता है कि सारी रचना एक सूत्र में बंधी हुई प्रतीत होती है। संक्षेप में हिंदी निबंध के विकास को चार कालों में विभक्त किया जा सकता है-

1. भारतेंदु युग (1873-1903)
2. द्विवेदी युग (1903-1920)
3. शुक्ल युग (1920-1937)
4. शुक्लोत्त युग (1937- अब तक)

भारतेंदु युग को हिंदी निबंध की विकास यात्रा का प्रारंभिक चरण माना जाता है। भरतेन्दुजी के निबंध ही हिंदी के प्राथमिक निबंध हैं। जिसमें निबंध कला की मूलभूत विशेषताएं उपलब्ध होती हैं। उन्होंने इतिहास, समाज, धर्म, राजनीति, यात्रा, प्रकृति वर्णन एवं व्यंग-विनोद जैसे विषयों पर निबंधों की रचना की। उनके आलोचनात्मक निबंधों की भाषा प्रौढ़ होते हुए भी दुरूह एवं बोझिल नहीं हो पाई है। भारतेन्दु जी के कुछ निबंधों के नाम यहां देना अप्रासंगिक न होगा- अंग्रेज स्तोत्र, पांचवें पैगंबर, स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, लेवी प्राण लेवी आदि। भारतेन्दु युग में प्रमुख निबंधकारों में स्वयं भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी निबंध के विकास के द्वितीय चरण को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का नाम पर द्विवेदी युग कहा गया है। देवी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादकत्व सन 1930 ई॰ में संभाला था। आचार्य द्विवेदी ने ,बेकन' के निबंधों को आदर्श निबंध मानते हुए उनके निबंधों का हिंदी अनुवाद 'बेकन विचार रत्नावली' के नाम से किया। इसके अतिरिक्त उनके अपने निबंधों का संग्रह 'रसज्ञ रंजन' नाम से प्रकाशित हुआ है। द्विवेदी जी के कुछ प्रसिद्ध निबंधों के नाम हैं- कवि और कविता, कवि कर्तव्य, प्रतिभा, साहित्य की महत्ता, लोभ, मेघदूत आदि। पण्डित महाविरप्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त अन्य प्रमुख निबंध लेखक थे- माधव प्रसाद मिश्र, गोविंद नारायण मिश्र, बाबू श्याम सुंदर दास, अध्यापक पूर्ण सिंह, पदम सिंह शर्मा, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, मिश्र बंधु, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी आदि।

# हिंदी निबंध से संबंधित प्रश्न-उत्तर

1.निबंध का क्या अर्थ है ? समझाइये।

ऊ. निबंध अंग्रेजी के "ऐसे" का पर्यायवाची शब्द है। यह एक ऐसी गद्य रचना है ,जिसमें लेखक स्वछंदता पूर्वक अपने विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति करता है।

2. विषय तथा शैली के आधार पर निबंधों का वर्गीकरण कीजिये ?

ऊ. विषय तथा शैली के आधार पर निबंध ६ प्रकार के माने जाते हैं -

१. वर्णनात्मक।

२. विचारात्मक।

३. विवरणात्मक।

४. भावात्मक।

५.मनोवैज्ञानिक।

६. हास्य व्यंग प्रधान।

3. हिंदी के चार ललित निबंधकारों का नाम बताइए ?

ऊ. हिंदी के ललित निबंधकारों में हजारी प्रसाद द्विवेदी ,विद्यानिवास मिश्र ,रामवृक्ष बेनीपुरी ,धर्मवीर भारती ,पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी ,कुबेरनाथ राय ,वासुदेव शरण अग्रवाल ,जगदीश चन्द्र माथुर ,शिवप्रसाद सिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

4. अध्यापक पूर्ण सिंह तथा पद्य सिंह शर्मा किस युग के निबंधकार हैं ?

ऊ. अध्यापक पूर्ण सिंह तथा पद्म सिंह शर्मा द्विवेदी युग के निबंधकार हैं।

## HINDI (HONS)-2nd SEMESTER

## Topics- हिंदी निबंध का उद्‌भव और विकास / Class-4/ Hindi Method

हिंदी निबंध के तीसरे चरण को शुक्ल युग की संज्ञा प्रदान की गई है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध क्षेत्र में पदार्पण करने से इसे नए आयाम एवं नई दिशाएं प्राप्त हुईं। उन्होंने 'चिंतामणि' में जो निबंध संकलित किए हैं उनसे हिंदी निबंध अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिखाई पड़ता है। आचार्य शुक्ल के अतिरिक्त इस काल के अन्य चर्चित निबंधकार हैं- बाबू गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, वियोगी हरि, राय कृष्णदास, वासुदेवशरण अग्रवाल, शांतिप्रिय द्‌विवेदी और माखनलाल चतुर्वेदी। इसमें बाबू गुलाबराय को हिंदी निबंध साहित्य की एक उपलब्धि कहा जा सकता है। उनके निबंध संग्रहों के नाम हैं- मेरे निबंध, मेरी असफलताएं, और फिर निराशा क्यों।

शुक्ल जी ने हिंदी निबंध को जो नए आयाम दिए उससे हिंदी निबंध का परवर्तीकाल में विविधमुखी विकास हुआ। विषय क्षेत्र, वैचारिकता, भाषा-शैली सभी दृष्टियों से हिंदी निबंध ने नई दिशाएं खोजीं। शुक्लोत्तर निबंधकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्‌विवेदी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्र, प्रभाकर मचवे, डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. विद्‌यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, देवेंद्र सत्यार्थी, कन्हैयालाल मिश्र, प्रभाकर आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी निबंध साहित्य बहुत कम समय में आशातीत प्रगति की है। भारतेन्दु युग से लेकर वर्तमान युग तक हिंदी निबंध ने क्रमशः प्रौढ़ता प्राप्त की है और निबंधों का विविधमुखी विकास हुआ है।

### हिंदी निबंध से संबंधित प्रश्न-उत्तर

5. आधुनिक युग के प्रमुख निबंधकारों के नाम बताइए ?

ऊ. हजारी प्रसाद द्‌विवेदी ,महादेवी वर्मा ,रामधारी सिंह दिनकर ,जैनेन्द्र ,कन्हैयालाल मिश्र ,धर्मवीर भारती ,जयप्रकाश भारती ,हरिशंकर परसाई आदि हैं।

6. आधुनिक युग के निबंधों के प्रमुख विषय क्या हैं ?

ऊ. आधुनिक युग के निबंधों के विषय में बहुत विस्तार हुआ है। जिनमें प्रमुख है - साहित्य समीक्षा ,सामाजिक परिवेश ,राजनीति ,विज्ञान ,कला इतिहास ,भूगोल ,मनोविज्ञान ,पुरातत्व ,वाणिज्य व्यवसाय आदि प्रमुख है।

7. आचार्य रामचंद शुक्ल गद्‌य की किन दो विधाओं में प्रसिद्‌ध है ? इस सन्दर्भ में उनकी दो रचना के नाम भी लिखिए ?

ऊ. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी निबंध और आलोचना के लिए प्रसिद्‌ध है। इनकी दो प्रमुख रचनाएं चिंतामणि (निबंध ) तथा त्रिवेणी (आलोचना ) आदि है।

8. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने किस प्रकार के निबंध लिखे हैं ?

ऊ. आचार्य रामचन्द्र ने मनोविकार सम्बन्धी तथा समीक्षात्मक निबंध लिखे हैं।

9. चार प्रमुख प्रगतिवादी निबंधकारों के नाम लिखिए ?

ऊ. रामविलास शर्मा ,धर्मवीर भारती ,शिवप्रसाद सिंह ,रामधारी सिंह दिनकर ,नामवर सिंह ,राजेन्द्र यादव आदि प्रमुख प्रगतिवादी निबंधकार हैं।

10. बाबू गुलबराय के दो निबंध संग्रहों के नाम लिखिए ?

ऊ. उनके निबंध संग्रहों के नाम हैं- मेरे निबंध, मेरी असफलताएं, और फिर निराशा क्यों।